#२८: सत्यता-४ : विकास और जागृति ही सृष्टि है

दिनांक -१९/१०/२०११

विकास और जागृति ही सृष्टि है | यही सह-अस्तित्व नित्य प्रभावी, नित्य प्रकटनशील होने का प्रमाण है | इसका दृष्टा, कर्त्ता, भोक्ता केवल मानव ही है | क्योंकि मानव ज्ञानावस्था की इकाई है | यह अध्ययन विधि से स्पष्ट हो गया है | इसी आधार पर मानव जाति एक, मानव धर्म एक होना अध्ययनपूर्वक स्वीकार होता है | इसे सर्वेक्षणपूर्वक देखा गया है | यही मानव का विशेषता है | विशेषता का मतलब मौलिकता है | मौलिकता का तात्पर्य केवल मानव में ही प्रमाणित होने की स्थिति, गति व प्रयोजन है | इसके मूल में समझदारी होना अति आवश्यक है | यही विकल्पात्मक समझदारी है |

विकल्पात्मक समझदारी का अध्ययन से ही सर्वमानव समझदार होने की घोषणा है अन्यथा किसी आयु के बाद मानव अपने को समझदार मानता ही है | भ्रमपूर्वक मानता है तथा जागृतिपूर्वक समझ लेता है | समझना ही विकल्पात्मक अध्ययन है | चेतना विकास मूल्य शिक्षा को समझना ही पारंगत होने का प्रमाण है | इसे भली प्रकार से जाँचा गया है | हर व्यक्ति जाँच सकता है | मानव परम्परा में ही स्वयं में विश्वास, सह-अस्तित्व में विश्वास होना ही समझदारी का प्रमाण है | जिसमें आदमी विश्वास करता है, उसी प्रकार जीता है | उसके पहले मान्यता के आधार पर जीता है | विश्वास निरंतर है, मान्यता क्षणिक है | इसके मूल में शरीर को जीवन समझने से क्षणिक प्रयोजन से व्यस्तता बनती है | जीवन को जीवन, शरीर को शरीर और शरीर की आवश्यकता का स्वरूप तथा जीवन की आवश्यकता का स्वरूप को प्रयोजित करना ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत होने का प्रमाण है |

विकल्पात्मक शिक्षा में पारंगत प्रमाण होना ही भ्रममुक्ति, अपराधमुक्ति है | मूलतः भ्रममुक्ति ही मुक्ति है | भ्रम केवल शरीर को जीवन मानना ही है | फलस्वरूप जीवन शरीर को जीवित रखने के लिये समर्पित होता है | यह समर्पण ही भ्रम और अपराध के रूप में प्रमाणित होता है | इससे सर्वाधिक लोग बचना चाहते हैं अथवा सर्वाधिक लोगों में देखने को मिलता है | इसी आधार पर विकल्पात्मक शिक्षा का प्रस्ताव है | व्यक्तिवाद, समुदायवाद के रूप में स्वीकृति अथवा सहमति ही आदर्शवाद, भौतिकवाद है | इन दोनों के विकल्प में सह-अस्तित्ववाद है | सह-अस्तित्व के मूल में अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन है | इसके फल -परिणाम में चेतना विकास मूल्य शिक्षा है | चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से पारंगत होने की स्थिति में भ्रम मुक्त, अपराधमुक्त होना है | यही राज्य और धर्म का प्रवर्तनशीलता का अंतिम सीढी है | यही मानव सहज आचरण, विचार, कार्य, व्यवस्था ही अखण्ड समाज के रूप में है | ऐसी स्थिति को पाने के लिये अधिकांश मानव में "आज जो समझदार मानव मान चुका है" सहमति रहती है | इसलिए इसे मानव सम्मुख प्रस्तुत किया है |

इस प्रस्ताव में अर्थात विकल्पात्मक प्रस्ताव में मानव का अध्ययन अनुभव, विचार, व्यवहार व्यवस्था रूप में अध्ययनगम्य हो चुका है | इसे हर मानव भली प्रकार से परीक्षणकर सकता है | यह हर मानव का अधिकार है | इस विधि से लोकसम्मत होना सहज हो गया है | जहां अध्ययन कार्य चल रहा है वहाँ पूरे मन से लोग लगे हुए हैं | जिसमें शोधकर्ता, प्रधानाध्यापक, व्यवस्थापक, अध्यापक सभी समाए हुए हैं | इसका फल-परिणाम मानव परम्परा में प्रकाशित होता है

| इस क्रम में मानव अपने मौलिकता, अधिकार, कर्तव्य, दायित्व का प्रयोग होना सहज है | इस क्रम में मानव अपने स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार को प्रमाणित करने की स्वतंत्रता है जिससे ही मानव पवित्र विचार, अनुभव प्रमाण सम्पन्न हो सकता है | इसके विपरीत में सभी अवैध बातों को वैध मानना ही होता है, दूसरा कुछ हो ही नहीं सकता, क्योंकि वर्तमान में अत्याधुनिक विधि से लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद को शिक्षा में वरीयता से प्रस्तुत किया जाता है, जबकि विकल्प विधि से समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सहज प्रमाण प्रस्तुत है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत